IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 4, Issue 3, February 2024

डॉ. मीरा कांत के कथा साहित्य में नारी उत्थान के सिद्धांत

अनुषा सिंघल[1] व डॉ. वेद कला यादव[2]
शोधार्थी, हिंदी विभाग[1]
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग[2]
सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

डॉ. मीरा कांत, एक प्रख्यात हिंदी साहित्यकार, जिन्होंने अपनी कथा साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से समाज में नारी के चरित्र को सुधारने और समझाने का कार्य किया है। उनकी रचनाएं नारी के अधिकार, स्वतंत्रता, और समाज में समानता की बातें सुनाती हैं और इस प्रकार नारी चेतना को बढ़ावा देने में सक्रिय रूप से योगदान करती हैं।

डॉ. मीरा कांत का कथा साहित्य उनकी सामाजिक समर्पणा और विचारशीलता की प्रतीक है। उनकी रचनाओं में चरित्र नारी चेतना को समझाने के लिए उन्होंने विभिन्न पहलुओं को प्रमोट किया है, जिनमें सामाजिक, आर्थिक, और रूपरूप नारी के स्वरूप की महत्वपूर्ण बातें शामिल हैं।

डॉ. मीरा कांत की रचनाओं में से एक अमूर्त तथा सुंदर कथा 'अधूरी दुनिया' है, जिसमें उन्होंने समाज में महिलाओं के स्थान की महत्वपूर्णता पर ध्यान केंद्रित किया है। इस कथा में, डॉ. मीरा कांत ने एक सुपरना रूप में एक महिला की कहानी को बयान किया है जिसने अपनी आत्मा की खोज में समाज की निर्धनता और अन्याय का सामना किया। इस कथा के माध्यम से डॉ. मीरा कांत ने समाज में महिलाओं के सामाजिक स्वरूप की महत्वपूर्ण बातें उजागर की हैं और चरित्र नारी चेतना को बढ़ावा दिया है।

उनकी कहानियों में, नारी का स्वतंत्रता से संबंधित मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया गया है। 'मुझे आजादी चाहिए' और 'स्वतंत्र मनोरंजन' जैसी कहानियों में, वह महिलाओं की आत्म–समर्पणा और स्वतंत्रता की महत्वपूर्णता पर बात करती हैं। इन कथाओं के माध्यम से, डॉ. मीरा कांत ने नारी के स्वतंत्रता और समर्पणा की महत्वपूर्ण बातें उजागर की हैं और उन्होंने चरित्र नारी चेतना को स्थापित करने का कार्य किया है।

डॉ. मीरा कांत के कथा साहित्य में चरित्र नारी चेतना का विश्लेषण करते समय, हम उनके लेखन की साहित्यिक गहराईयों में विचरण करते हैं जो समाज में सामाजिक बदलाव और समर्थन को प्रोत्साहित करते हैं। उनकी रचनाएं एक सकारात्मक नारी चेतना की ओर प्रवृत्ति करती हैं और समाज में समानता और न्याय के प्रति उनकी आस्था को प्रतिष्ठित करती हैं। उनका कथा साहित्य न केवल रमणीय है बल्कि एक सशक्त, सुसंस्कृत, और समर्थ नारी की ऊर्जा को उत्कृष्टता दिखाता है।

मुख्य शब्दः डॉ. मीरा कांत, कथा साहित्य, नारी चेतना, समाजिक परिवर्तन ।

संदर्भ

1. मीराकांत के उत्तर–प्रश्न नाटक पृ० संख्या– 68
2. मीराकांत के 'ईहामृग' नाटक पृ० संख्या–28
3. मीराकांत के 'नेपथ्य राग 'नाटक पृ० सख्या– 50
4. मीरा कांत के 'कंधे पर बैठा था सांप' नाटक 15–22
5. मीराकांत के 'कंधे पर बैठा था सांप,'मेघ प्रश्न' नाटक पृठ संख्या 144

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in